टाइटल कोड - MPHIN7675
Email- haldharkisankgn@gmail.com

राष्ट्रीय मासिक समाचार पत्र

हलधर किसान

प्रवेशांक | मार्च 2022, वर्ष 01 अंक 01 | पृष्ठ-8 मूल्य -5.00 रुपये

केंद्र व प्रदेश सरकार किसानों को दिला रही उनका हक, सीधे बैंक खाते में भेजा रहा है योजनाओं का पैसा: कृषि मंत्री तोमर

मुख्यमंत्री चौहान, कृषि मंत्री पटेल की मौजूदगी में हुआ मेरी पॉलिसी मेरे हाथ अभियान के शुभारंभ

इंदौर। भारत सरकार की महत्वाकांक्षी प्रधानमंत्री फसल बीमा योजनाके अंतर्गत फसल बीमा पॉलिसी वितरण अभियान 'मेरी पॉलिसी, मेरे हाथ' अभियान का शुभारंभ मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान व केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने इंदौर से करीब 35 किमी दूर ग्राम बुढी बरलाई में समारोहपूर्वक किया। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत बीमा लेने वाले किसानों को खरीफ सीजन के दौरान घर.घर जाकर बीमा पॉलिसी की हार्ड कॉपी दी जाएगी।

कार्यक्रम में केंद्रीय कृषि मंत्री तोमर ने मध्य प्रदेश में किसानों के कल्याण के लिए किए गए बहुतेरे प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि पीएम फसल बीमा योजना का मध्य प्रदेश में गंभीरता एवं संवेदनशीलता के साथ निराकरण किया जा रहा है। केंद्र व राज्य सरकार मिलकर किसानों को उनका हक दिला रही है और अब न कोई दलाल है, न कोई बिचौलिया। आज हर किसी की जुबान पर प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना से लाभ मिलने की बात है। किसानों को संकट के समय उनकी भरपूर सहायता की गई है। किसानों के जीवन स्तर में सकारात्मक बदलाव लाया जाएं, यह प्रधानमंत्री मोदी की सोच और उनका संकल्प है, जिसे साकार करने के लिए पुरजोर प्रयास किए जा रहे हैं। तोमर ने कहा कि देश.प्रदेश में जैविक कृषि उत्पादन व निर्यात लगातार बढ़ रहा है। जैविक उत्पादों के दाम भी किसानों को अच्छे मिल रहे हैं। मध्य प्रदेश में जैविक खेती का रकबा बढ़ने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए तोमर ने कहा कि जैविक खेती के क्षेत्र में मध्य प्रदेश देश में अव्वल है।

मध्य प्रदेश में बढ़ रहा सिंचाई का रकबा

मुख्यमंत्री चौहान ने समारोह में कहा कि आज का दिन प्रदेश के लिए सौभाग्य का दिन है, जब मध्य प्रदेश से ही प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के अंतर्गत मेरी पॉलिसी मेरे हाथ अभियान का राष्ट्रव्यापी शुभारंभ हुआ है। मध्य प्रदेश से ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किसानों के हित में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का क्रियान्वयन प्रारंभ किया था। चौहान ने कहा कि प्रदेश में इस अभियान के तहत गांव.गांव शिविर लगाए जाएंगे और किसानों को उनके घर पर ही बीमा पॉलिसी उनके हाथ में पहुंचाई जाएगी। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी किसानों की लगातार चिंता कर रहे हैं। मध्य प्रदेश में सिंचाई का रकबा लगातार बढ़ाया जा रहा है। अभी 43 लाख हेक्टेयर रकबे में सिंचाई हो रही है, आगे यह 65 लाख हेक्टेयर किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि किसानों ने अथक परिश्रम कर प्रदेश में रिकॉर्ड कृषि उत्पादन किया है। फलस्वरुप मध्य प्रदेश कृषि के क्षेत्र में देश में नंबर वन है। मुख्यमंत्री ने कहा कि आपदा से फसलों की नुकसान का किसानों को पूरा मुआवजा दिया जाएगा, वहीं उन्होंने कहा कि मध्य प्रदेश शासन ने 22 महीने में किसानों के बैंक खातों में 1.72.894 करोड़ रुपए दिए है, जो अपने आप में एक चमत्कार है।

निमाड़ में जैविक खेती की ओर बढ़ते किसान...

निमाड़ की धरती पर हो रही एप्पल की उपज, पहले फल की तस्वीर फेसबुक पर देख अमेरिका से किसान को मिली सराहना

कसरावद। आमतौर पर अब तक आपने सेवफल की खेती के लिए जम्मू कश्मीर सहित कई पहाड़ी राज्यों के नाम सुने होंगे, लेकिन अब निमाड़ में भी इसकी खेती होने लगी है। किसी दिन निमाड़ का अपना एप्पल होगा। ऐसा आत्मविश्वास खरगोन के एक किसान का है। जो लगभग 45 वर्षों से खेती किसानी में जुटे हैं। इनकी खेती किसानी में जॉइनिंग उस समय हुई जब एच.4 कॉटन किस्म (कपास) पहली.पहली बार निमाड़ में आई थी और इनके ही खेत में डेमो लगाया गया था। तब से लेकर आज तक खरगोन में कसरावद के 8 वी पास 65 वर्षीय सुरेंद्र पाचोटिया ने अपनी खेती में अनेकों प्रयोग किये हैं। तीन वर्ष पूर्व ऐसा ही एक प्रयोग निमाड़ में एप्पल की खेती का शुरू किया था। जो आज पूरी सम्भावनाओं के साथ सामने आ रहा है। उनके खेत में लगाए गए 40 सेवफल के पौधों से 1 साल पहले ही फल पक चुके हैं। अपने सफल प्रयोग से उत्साहित होकर सुरेंद्र पाचोटिया ने सेवफल के 200 नए पौधे लगाकर खेती प्रारम्भ कर दी है। मूल रूप से गन्ने की खेती कर रहे सुरेंद्र अब इसके साथ अमरूदए गन्ने की विभिन्न किस्मों और सब्जियों की नर्सरी तैयार करने में समय ख़फाते हैं।

फेसबुक से दक्षिण अमेरिका के सूरीनाम पहुँचा निमाड़ का सेवफल मिली सराहना

आज से लगभग एक साल पहले अपने सेवफल के पौधों से सुर्खलाल रंग के फल आये तो सुरेंद्र उत्साहित होकर अपनी फेसबुक पोस्ट कर दिया। उनकी पोस्ट को दक्षिण अमेरिका महाद्वीप के सूरीनाम देश में रहने वाले भारतीय मूल के नागरिक ने पसन्द करने के बाद उनकी सराहना की। तब से सुरेंद्र ने ठान लिया कि किसी न किसी दिन निमाड़ का अपना एप्पल भी होगा। जिसकी खेती भी होगी और बाजार में भी पसंद किया जाएगा।

नरवाई जलाते नहीं, बनाते है उपयोगी जैविक खाद

मूल रूप से गन्ने की खेती करने वाले किसान सुरेंद्र ने 6 एकड़ में गन्ने की खेती करते हैं। गन्ने में बड़ी संख्या में नरवाई निकलती है। जिसे किसान आग लगाकर राख बना देते हैं। लेकिन सुरेंद्र जी का जरा हटकर फंडा अपनाया है। वे गन्ने के ठूठ बच जाते है और अगर गन्ने की दूसरी फसल लेना है तो गन्ना कटने के बाद बेड ;गन्ने की बेडद्ध के दोनों ओर कल्टीवेटर से जड़े खोल लेते है। इससे मिट्टी ऊपर हो जाती है और दूसरी ओर मिट्टी नरवाई पर चढ़ जाती है। फिर दो से तीन पानी और रोटावेटर चला देते है। गन्ना पकने से पहले जैविक खाद खेत में ही तैयार हो जाती है।

गर्मियों में मूंग की बुवाई करना है उपयुक्त

मूंग एक महत्वपूर्ण दलहनी फसल है। इसमें उच्च गुणवत्ता वाले प्रोटीन की भरपूर मात्रा पाई जाती है। मूंग की खेती भारत और मध्य एशिया में व्यापक रूप में की जाती हैण् सभी घरों में मूंग का सेवन दाल के रूप में किया जाता है।

मूंग एक महत्वपूर्ण दलहनी फसल है। इसमें उच्च गुणवत्ता वाले प्रोटीन की भरपूर मात्रा पाई जाती है। मूंग की खेती भारत और मध्य एशिया में व्यापक रूप में की जाती है। सभी घरों में मूंग का सेवन दाल के रूप में किया जाता है। इसके अलावा अंकुरित, साबुत अनाज के रूप में किया जाता है। मूंग की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसकी खेती तीनों मौसम में हो सकती है। मगर मूंग की खेती गर्मियों के मौसम में करने से अधिक पैदावार मिलती है।

मूंग की खेती गर्मियों के मौसम में करने से भूमि की गुणवत्ता अच्छी होती है। भूमि के भौतिक, जैविक और रासायनिक गुणों में सुधार होता है। इसके अलावा कीटों और रोगों का प्रकोप भी कम रहता है। दरअसल, भारत मूंग फसल का सबसे बड़ा उत्पादक और उपभोक्ता माना जाता है। आमतौर पर पूरे भारत में इसकी खेती की जाती है। इसकी फलियां अंडाकार आकार की होती हैं। मूंग दाल में पर्याप्त मात्रा में फाइबर और आयरन पाया जाता है। इसमें फाइबर की मात्रा अधिक होने के कारण पचाना बहुत आसान होता है, साथ ही रक्तचाप को नियंत्रित करता है, तो चलिए मूंग की खेती की जानकारी के बारे में जानते हैं।

मूंग की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु और तापमान मूंग की खेती के लिए गर्म और आर्द्र जलवायु उपयुक्त रहता है। वहीँ तापमान 25 डिग्री सेल्सियस से 35 डिग्री सेल्सियस के बीच होना चाहिए साथ ही मध्यम बारिश की आवश्यकता होती हैण् वहीँ आपको बता दें कि इसकी खेती के लिए जलजमाव और बदली हानिकारक होती है

मसाला बोर्ड के दल ने बेड़िया मंडी का किया अवलोकन

बैडिया। मसाला बोर्ड और इंडिया के दल दो दिवसीय भ्रमण पर आए हुए हैं। सोमवार को दल ने उद्यानिकी अधिकारियों के साथ विस्तृत चर्चा के बाद बेड़िया मंडी का अवलोकन करने पहुँचे। मसाला बोर्ड के अधिकारियों में आशीष जायसवाल, भरत अर्जुन और अभिनव जैन ने बेड़िया के व्यापारियों से भी चर्चा की। बेड़िया मंडी के व्यापारियों में अकलिम और समरथ बिरला से चर्चा करते हुए व्यापारियों की आवश्यकता और निर्यात करने के लिए आवश्यक सुविधाओं के बारे में जाना। व्यापारियों ने बताया कि फिलहाल अगर मिर्च के लिए बड़े कोल्ड स्टोरेज बन जाये तो बहुत हद तक सुधार होगा। दल के अधिकारियों ने जाना कि आप कितने बड़े स्टोरेज और कितनी मिर्च की आवक होती है। बताया गया कि करीब डेढ़ लाख बोरी मिर्च के लिए कोल्ड स्टोरेज बनना चाहिए। व्यापारियों ने कहा कि अक्टूबर से जनवरी माह तक यहां 30 से 35 लाख बोरी की आवक हुई है। प्रत्येक बोरी 35 किलो की होती है। दल के अधिकारियों ने कहा कि एक्सपोर्टर्स के साथ आप लोगां की बैठक हो तो विदेशों में मिर्च के निर्यात पर कुछ लाभ हो सकता है घ् व्यापारियों ने कहा कि सीधे विदेशों में सप्लाई करने वाले एक्सपोर्टर्स हो तो उन्हें अवश्य लाभ होगा। अवलोकन के दौरान उद्यानिकी उपसंचालक मोहन मुजाल्दा और उद्योग विभाग के महाप्रबंधक एसएस मंडलोई सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

मिर्च में अगर 32 से अधिक स्प्रे कर रहे हैं तो वह खाने योग्य नहीं- विशेषज्ञ

खरगोन। किसी भी किस्म की मिर्च अधिक से अधिक 35 स्प्रे तक सहन की क्षमता होती है। अगर ज्यादा है तो मिर्च खाने योग्य नहीं है। यह जानकारी मिर्च के उत्पादन और निर्यात की संभावनाओं और आवश्यक टेस्टिंग लेबोरेटरी के पहलुओं के बारे में जानने के लिए नई दिल्ली से दल में शामिल विशेषज्ञ अर्जुन गुडाडे ने कही।

एक जिला एक उत्पाद योजना के अंतर्गत जिले के किसानों को मिर्च के उत्पादन से लेकर निर्यात करने तक मुनाफा देने का उद्देश्य प्रकियाधीन है। दल में मसाला बोर्ड ऑफइंडिया के गुना मसाला पार्क के निर्यात संवर्धन अधिकारी आशीष जायसवाल, मसाला पार्क छिंदवाड़ा के मिर्च वैज्ञानिक भरत अर्जुन गुड़ाडे और चार्टेड अकाउंटेंट अभिनव जैन शामिल थे।

अधिकारियों ने उद्यानिकी कार्यालय में विभागीय अमले के साथ जिले में मिर्च के उत्पादनए प्रजातियांए टेस्ट, किसानों की स्थिति, वर्तमान में लागत और लाभ जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की। चर्चा के दौरान केवीके खरगोन के वैज्ञानिक डॉ.कुल्मी ने भी जिले के मिर्च उत्पादन और यहां की भूमि में मिर्च की उत्पादन शक्ति के बारे में विस्तार से बताया। चर्चा के दौरान ही एफपीओ में शामिल किसान श्रीराम पाटीदार ने बताया कि जिले में औषतन हर किसान मिर्च की फसल में 100 से अधिक स्प्रे करता है। बगवा के एफपीओ से जुड़े किसान पाटीदार ने कहा कि किसी भी किसान को हर तीसरे दिन स्प्रे का उपयोग करना पड़ता है। इसके बाद अगर वायरस की मार होती है तो वो अलग है।

मिर्च के निर्यात की सम्भावनाओं के लिए निरीक्षण पर आया मसाला बोर्ड का दल

एफएसएसएआई के नॉर्म्स पर खरा उतरती है निमाड़ की मिर्च

मिर्च निर्यात के विषय पर चर्चा के दौरान कई बिंदु सामने आए इस पर केवीके के वैज्ञानिक डॉ. कुल्मी ने कहा कि पिछले दिनों खरगोन जिले की मिर्च टेस्टिंग के मामले में बिंदु सामने आया कि एफएसएसएआई ने यहां की मिर्च को उनके नॉर्म्स के मुताबिक माना है। हालांकि मसाला बोर्ड के विशेषज्ञों का कहना है कि अंतरर्राष्ट्रीय स्तर पर मिर्च के निर्यात के नॉर्म्स अलग है वे 6 तरह से मिर्च की टेस्टिंग करते हैं। इस बैठक में उद्यानिकी विभाग के उपसंचालक मोहन मुजाल्दा, व्यापार एवं उद्योग विभाग के महाप्रबंधक एसएस मंडलोई, एसएचडीओ पर्वत बड़ोले, जगदीश बड़ोले और विभाग के विस्तार अधिकारी मौजूद रहे। अधिकारियों की बैठक के बाद दल बेड़िया मंडी के विजिट पर पहुँचा। मंगलवार को दल सुरपाला के निमाड़ीलाल एफपीओ और जनपदों में मिर्च उत्पादक किसानों के साथ केवीके में कार्यशाला करेंगे।

पहले मिर्च तोड़ ले उसके बाद स्प्रे उपयोगी

किसान पाटीदार के विचार जानने के बाद विशेषज्ञ और वैज्ञानिक डॉ. कुल्मी ने कहा कि केमिकल का छिड़काव करने से पूर्व किसान को मिर्च तोड़ लेना चाहिए और किसी भी केमिकल का प्रभाव फसल में वास्तविक अर्थों में 15 दिनों के बाद नजर आता है। किसानों को सम्भवत: यह देखना चाहिए कि किस कीड़े या किसी बिमारी से फसल प्रभावित हो रही है उसी के अनुरूप कीटनाशक का प्रयोग करे अन्यथा नहीं।

आप भी करें सहभागिता

हलधर किसान मासिक समाचार पत्र में आप खेती. किसानी, पशुपालन, मत्स्य पालन, बागवानी जैसे क्षेत्र से जुड़े समाचार, लेखन, अनुसंधान, किस्से, कहानी, प्रकाशित कराना चाहते है तो, हमारे वाट्सअप नंबर. 98262 25025, 94254 89337, ई- मेल. haldharkisankgn@gmail.com पर भेज सकते है। हम उसे अपने आगामी अंक में प्रकाशित करने का प्रयास करेंगे।

गेहूं खरीदी कि तैयारी में जुटी प्रदेश सरकार, रजिस्ट्रेशन और भुगतान प्रक्रिया में किए बदलाव

भोपाल। मार्च माह की शुरुआत से ही प्रदेश में खरीफ फसलों की आवक शुरु हो जाती है। खासकर गेहूं की फसल आने में अब कुछ ही हफ्तों का समय बचा है। ऐसे में शासन स्तर पर न्यूनतम समर्थन मूल्य पर इसकी खरीद के लिए प्रदेश सरकार ने तैयारियों तेज कर दी है।

देशभर में गेहूं की सरकारी खरीद के मामले में मध्य प्रदेश रबी मार्केटिंग सीजन 2020.21 के दौरान पहले और 2021.22 में दूसरे स्थान पर रहा था। ऐसे में इस बार भी सरकार इस मसले पर संजीदा है। खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग के प्रमुख सचिव फैज अहमद किदवई ने बताया कि आरएमएस 2022.23 में समर्थन मूल्य पर गेहूं खरीद की प्रक्रिया को और अधिक सरल कर दिया गया है। खरीद केंद्र पर जाकर फसल बेचने के लिए एसएमएस की अनिवार्यता को समाप्त कर दिया गया है। अभी तक किसान एसएमएस पर मिली तारीख पर ही अपनी फसल खरीद केंद्र पर बेच सकता था, जबकि नई व्यवस्था में निर्धारित पोर्टल से नजदीक के खरीद केंद्र, तारीख और समय स्लॉट का खुद चयन कर सकेंगे। स्लॉट का चयन खरीद शुरू होने की तारीख से एक सप्ताह पहले तक किया जा सकेगा।

भुगतान व्यवस्था भी हुई अपग्रेड

नई व्यवस्था में किसानों को खरीदी गई फसल का भुगतान अब उनके आधार नंबर से लिंक बैंक खाते में सीधे होगा। इससे बैंक खाता नंबर और आईएफएससी कोड त्रुटि से भुगतान में होने वाली असुविधा समाप्त हो जाएगी। किसान को अपने आधार नंबर से बैंक खाता और मोबाईल नंबर को लिंक कराकर उसे अपडेट रखना होगा। किसान आधार रजिस्ट्रेशन केंद्र पर मोबाईल नंबर की एंट्री करा सकेंगे।

दो तरह से होगा रजिस्ट्रेशन

प्रमुख सचिव किदवई ने बताया कि खरीद के लिए रजिस्ट्रेशन की निःशुल्क एवं सशुल्क दोनों ही व्यवस्था रखी गई है। निशुल्क व्यवस्था में किसान खुद के मोबाईल से निर्धारित लिंक पर, ग्राम एवं जनपद पंचायत, तहसील एवं सहकारी समिति के सुविधा केंद्रों पर जाकर रजिस्ट्रेशन करवा सकते हैं।

ऐसे किसान जो खुद यह काम नहीं कर सकते, वे कियोस्क के माध्यम से अधिकतम 50 रुपये का शुल्क देकर एमपी ऑनलाईन या कॉमन सर्विस सेंटरए लोकसेवा केंद्र अथवा निजी साइबर कैफे के माध्यम से अपना रजिस्ट्रेशन करा सकेंगे। इस व्यवस्था से अब उन्हें लंबी लाइनों में इंतजार नहीं करना होगा। सिकमी, बटाईदार एवं वन पट्टाधारी किसान केवल सहकारी समिति स्तर पर स्थित रजिस्ट्रेशन केंद्रों पर ही पंजीकरण करा सकेंगे।

मध्य प्रदेश में एमएसपी पर हुई गेहूं की खरीद

रबी मार्केटिंग सीजन	खरीदी (एलएमटी)
2012.13	85.07
2013.14	63.55
2014.15	71.89
2015.16	73.09
2016.17	39.92
2017.18	67.25
2018.19	73.13
2019.20	67.25
2020.21	129.42
2021.22	128.16

(स्त्रोत, भारतीय खाद्य निगम)

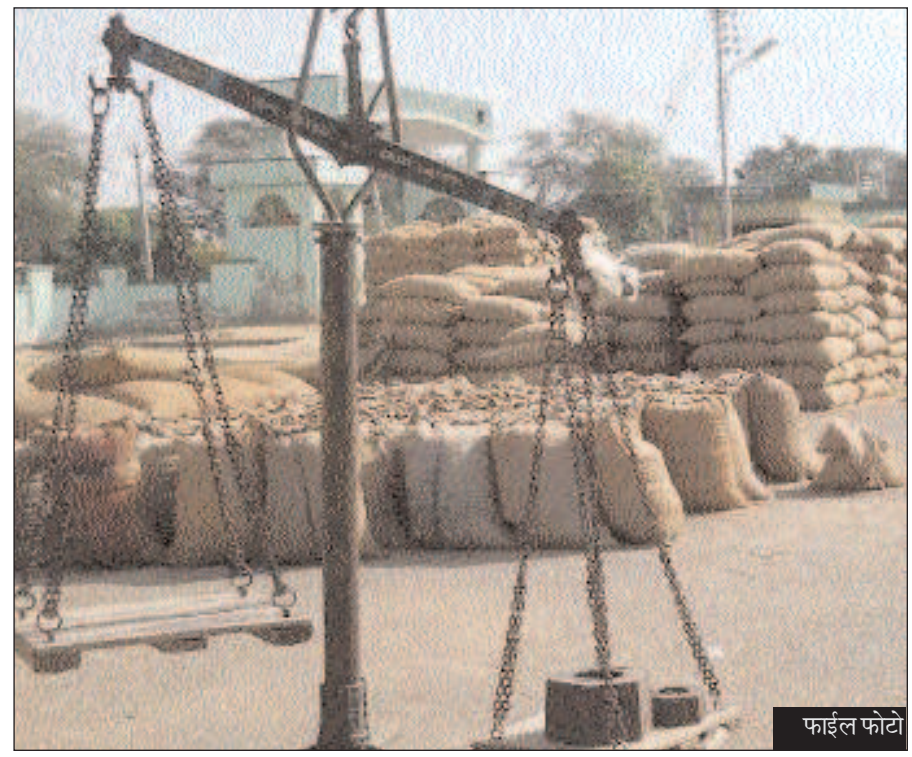
फाईल फोटो

आधार नंबर का वेरिफिकेशन हुआ अनिवार्य

रजिस्ट्रेशन कराने और फसल बेचने के लिए आधार नंबर का वेरिफिकेशन अनिवार्य होगा। वेरीफिकेशन आधार नंबर से लिंक मोबाईल नंबर पर मिली ओटीपी या बोयामीट्रिक डिवाईस से किया जा सकेगा। रजिस्ट्रेशन के लिए अनिवार्य होगा कि भू.अभिलेख में दर्ज खाते एवं खसरे में दर्ज नाम का मिलान आधार कार्ड में दर्ज नाम से होगा।

किदवई ने बताया कि इन बदलावों संबंधी विस्तृत विवरण सभी कलेक्टर्स को पत्र के माध्यम से भेजे गए हैं। किसान अपने जिले के कलेक्टर कार्यालय से प्रक्रिया के संबंध में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

चार जिलों को मिलाकर बनायेंगे निमाड़ दुग्ध महासंघ

खरगोन। समाज के अंतिम व्यक्ति तक सीधे पहुंच कर उन्हें लाभान्वित करने की दृष्टि से देशभर में सहकार भारती का सदस्यता अभियान प्रारम्भ हुआ है। इस कड़ी में सहकार भारती जिला ने एक वृहद बैठक आहूत की। बैठक की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष दिलीप जोशी ने की। मुख्य अथिति राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य प्रकाश रत्नपारखी एवं विशेष अतिथि के रूप में माध्यमिक शिक्षा मंडल के पूर्व उपाध्यक्ष भगीरथ कुमरावत थे। जिला प्रचार मंत्री श्याम पांडे ने बताया कि सहकार भारती के माध्यम से खरगोन, खंडवा, बड़वानी और बुरहानपुर को मिलाकर निमाड़ दुग्धसंघ की स्थापना का प्रस्ताव पारित हुआ है। रत्नपारखी ने कहा कि निमाड़ में पशुधन की बाहुल्यता है किंतु बिना संगठन के किसान लाभान्वित नही हो पाते,सहकार भारती के माध्यम से किसान द्वारा उत्पादित सभी वस्तुओं का सही मूल्यांकन होगा। अध्यक्षीय उद्बोधन में दिलीप जोशी ने कहा कि हम सभी प्राणप्रण से सहकार भारती को शिखर पर ले जाने का संकल्प ले। कार्यक्रम का संचालन सहकार भारती के जिला महा मंत्री दीपक कानूनगो ने किया। इसमे सदस्यता पुस्तिकाओं का वितरण करने के साथ ही सहकार भारती के मुखपत्र सहकार सुगंध की सदस्यता भी ली गई। बैठक में सहकार भारती के जिला उपाध्यक्ष मोहन जायसवाल, कपूरचंद पाटीदार, जिला मंत्री गणेश पाटीदार, महिला प्रमुख मीरा शर्मा, आनंद शर्मा, बलिराम पटेल, रघुवीर सिंह, अतुल जोशी, वंदना कुमरावत सहित कार्यकारिणी के अनेक सदस्य कार्यकर्ता उपस्थित थे।

2025 तक 1 लाख पंचायतों तक सदस्यता का लक्ष्य

भारतीय किसान संघ का 13वां अधिवेशन, अखिल भारतीय 58 सदस्यीय नवीन कार्यकारिणी घोषित

भोपाल। भारतीय किसान संघ के अधिवेशन के अंतिम दिन रविवार को भारतीय किसान संघ के अखिल भारतीय अध्यक्ष व महामंत्री का निर्वाचन किया गया। अधिवेशन में सीएम शिवराज सिंह चौहान भी पहुंचे थे। उन्होंने पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं से मुलाकात की।

समापन सत्र को संबोधित करते हुए किसान संघ के राष्ट्रीय संगठन मंत्री दिनेश कुलकर्णी ने कहा कि कोरोना काल मे किसान संघ के कार्यकर्ताओं ने मुस्तेदी से कृषि कार्य कर देश की अर्थव्यवस्था को गिरने नही दिया। किसान संघ आगामी 2025 तक देश भर की एक लाख पंचायतों तक अपनी सदस्यता के लक्ष्य को लेकर कार्य योजना बना रहा हैंए पूर्वोत्तर के जो राज्य अछूते रह गए हैं वहाँ भी संगठन का विस्तार करने का लक्ष्य हैं।

समापन सत्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सम्पर्क प्रमुख व भारतीय किसान संघ के पालक अधिकारी रामलाल, किसान संघ के राष्ट्रीय संगठन मन्त्री दिनेश कुलकर्णी, भारतीय मजदूर संघ के राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुरेन्द्र सिंह, राष्ट्रीय मंत्री पेरूमाल गंगाधर, सांई रेडडी, क्षेत्रीय संगठन मंत्री महेश चौधरी, प्रदेश अध्यक्ष कमल सिंह आंजना, मध्यभारत के प्रांत अध्यक्ष कैलाश सिंह ठाकुर, प्रांत महामंत्री पवन शर्मा, महाकौशल प्रांत अध्यक्ष गजराज सिंह, प्रांत महामंत्री प्रहलाद पटेल, मालवा के प्रांत अध्यक्ष रामप्रसाद सूर्या, प्रांत महामंत्री रमेश दांगी, प्रांत संगठन मंत्री मनीष शर्मा, भरत पटेल, अतुल माहेष्वरी, प्रचार प्रमुख राघवेंद्र सिंह पटेल सहित देशभर से आये किसान संघ के पदाधिकारियों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

मंच से देशभर के विभिन्न प्रांतो से आये प्रांतो के अध्यक्षों ने अपनी क्षेत्रीय भाषा में किसान सभा को संबोधित करते हुये अपने राज्यों की समस्यायें केंद्रीय प्रतिनिधियों के सामने खुले मंच पर रखी।

कृषक पोर्टल पर व्यापारियों का पंजीयन और किसानों को भुगतान की पूर्ण गारंटी जैसे सुधारों के साथ यदि नवीन कृषि कानून लागू होते तो देश के किसानों के हित में बेहतर रहते। कृषि कानून वापसी से किसानों का नुकसान हुआए केंद्र सरकार का यह कदम किसानों के हित में नही रहा। यह बयान आज किसान संघ के अधिवेशन के समापन सत्र पर पत्रकारों से बात करते हुए भारतीय किसान संघ के नवनिर्वाचित राष्ट्रीय महामंत्री मोहनी मोहन मिश्र ने दिए।

श्री मिश्र ने कहा कि कृषि बिल की वापसी से सर्वाधिक नुकसान छोटे मझोले किसानों को हुआ हैए हमारे द्वारा बिल में जिन सुधारो की बात कही गयी थी उनके साथ यदि यह बिल लागू होता तो देश के करोड़ो किसानों को लाभ होता। श्री मिश्र ने कहा कि किसानों के उनकी लागत का पूर्ण मूल्य मिले यह किसानों का नैतिक अधिकार हैं और किसानों को उनका यह हक मिले इसके लिए भारतीय किसान संघ प्रयासरत हैं।

किसान संघ के राष्ट्रीय मंत्री साई रेड्डी ने प्रेस को बताया कि पूर्वोत्तर राज्यो में किसानों के लिए बाजार उपलब्ध हो, देश भर में टेक्स फ्री बेचने की अनुमति मिलेए जैविक खेती समूचे देश मे लागू जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर अधिवेशन में मंथन चला।

राजस्थान के बद्रीनारायण चौधरी अध्यक्ष और उड़ीसा के मोहनीमोहन मिश्र महामंत्री बने

देशभर से आये किसान संघ के प्रतिनिधियों ने निर्वाचन अधिकारी राष्ट्रीय संगठन मंत्री दिनेश कुलकर्णी की उपस्थिति में राजस्थान के बद्रीनारायण चौधरी को भारतीय किसान संघ के अखिल भारतीय अध्यक्ष व उड़ीसा के मोहिनी मोहन मिश्र को अखिल भारतीय महामंत्री निर्वाचित घोषित किया गया। उसके बाद महामंत्री मोहिनी मोहन मिश्र ने अखिल भारतीय कार्यकारिणी की घोषणा की। जिसमें उपाध्यक्ष के रूप में भैया राम मौर्य, पेरुमल, राम भरोस बसोतिया, श्रीमती कपिला मुठे, राष्ट्रीय मंत्री का दायित्व साईं रेड्डी, श्रीमती वीणा सतीश, भानू थापा, बाबू भाई, कोषाध्यक्ष पद पर युगल किशोर मिश्र, सह कोषाध्यक्ष पद पर राजेन्द्र पालीवाल, संघठन मंत्री दिनेश दत्तात्रेय कुलकर्णी, सह संघठन मंत्री गजेन्द्र सिंह, जैविक प्रमुख पद्मश्री हुकूमचन्द पाटीदार, सह जैविक प्रमुख धर्मपाल सिंह ठाकुर, महिला संयोजिका श्रीमती मन्जू दीक्षित, सह महिला संयोजिका कल्पना बेन, कार्यालय मंत्री चंद्रशेखर, अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख राघवेन्द्र सिंह पटेल को घोषित किया गया।

अन्तराष्ट्रीय बाजार में बिकने वाली फसलें भी लगा रहा ईटावदी का किसान

जड़ीबूटी फार्मर मेडिसिन वाला किसान के नाम से बनाई पहचान

मोहन पाटीदार के खेत में खरीफ की फसल के रूप में किनोवा लिया गया।

खरगोन। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में 50 हजार से 1 लाख रुपए में बिकने वाले किनोवा जो एक बथुवा प्रजाति का पौधा होकर इसकी खेती दक्षिण अमेरिकी देशों में की जाती है। यह पौधा अब निमाड़ में भी लगाया जा रहा है।

जी, हां खेती में नवाचारों, औषधिय पौधों की खेती को लेकर अपनी अलग पहचान बनाने वाले महेश्वर के इटावदी गांव निवासी किसान मोहन पाटीदार इन दिनों जिले में मेडिशनल खेती को लेकर चर्चाओं में बने हुए है। इन्हें जड़ीबूटी फार्मर मेडिसिन वाला किसान भी कह सकते हैं। वर्ष 1999 में भोपाल में सेडमैप द्वारा एक प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण में 20 वर्ष पहले कला में स्नातक की डिग्री लेने वाले मोहन पाटीदार भी पहुँचे। तभी इनका परिचय औषधीय खेती सफेद मूसली से हुआ। वापस आने के बाद मोहन ने अपने खेत के सफेद मूसली की खेती करने का निर्णय कर लिया। इसके लिए उन्होंने बैंक से 1 लाख रुपये का लोन लिया। लोन लेने के बाद महाराष्ट्र से सफेद मूसली के बीज बुलवा कर खेती में नए प्रयोग की शुरुआत की। तब से लेकर आज तक सफेद मूसली की लगातार खेती करते रहे हैं। इस बीच कई तरह के उतार चढाव देखे इसमें इन्हें मुनाफा हुआ तो घाटा भी लेकिन सफेद मूसली की खेती करना नहीं भूले। सिर्फ सफेद मूसली ही नहीं इसके बाद अश्वगंधा, अदरक और फिर तुलसी व किनोवा और अब अकरकरा की औषधीय फसलों की खेती निसंकोच सफलता के साथ कर रहे हैं।

अरब मूल की खेती करने में भी पीछे नहीं

मोहन सुखदेव पाटीदार के पास अपनी 20 एकड़ भूमि है। इस बार रबी की फसल के तौर पर 1 एकड़ में अरब मूल की फसल अकरकरा को चुना। इसकी खेती में 6 से 8 माह का समय लगता है। इस फसल को सम शीतोष्ण जलवायु में उपजा जाता है। हमारे देश में अकरकरा की उप्र. मप्र, गुजरात, हरियाणा और महाराष्ट्र में खेती की जाती है। अकरकरा को अधिक धूप की जरूरत होती है। पौधों को अंकुरित होने के लिए 20 से 25 डिग्री और विकास के लिए कम से कम 15 और अधिकतम 30 डिग्री तापमान की जरूरत होती है। पकने के समय 35 डिग्री तापमान अधिक उपयुक्त होता है। जिसका मुख्य रूप से चिकित्सा जगत की कई तरह की मेडिसिन में किया जाता है। अकरकरा में उत्तेजक गुण होने के कारण आयुर्वेद में इसे पुरुषों और महिलाओं के उपयोग के लिए लाभकारी माना जाता है। अकरकरा सिरदर्द, सर्दी. खांसी, दांत दर्द कम करने में, मुंह में बदबू को दूर करने, मधुर स्वर के लिए, सांस संबंधी समस्याओं में आराम के अलावा दर्जनों बीमारियों या कमजोरी में उपयोग में लायी जाने वाली मेडिसिन में अकरकरा मुख्य है। आयुर्वेद में अकरकरा के फूल, पंचांगण और जड़ का उपयोग औषधि के रूप में किया जाता है। इसका बाजार में 400 रूपये प्रति किलो तक भाव मिलता है।

दक्षिण अमेरिका की सबसे पौषक तत्वों वाली फसल किनोवा भी

किनोवा में बहुतायत में प्रोटीन होने से इसको सबसे अच्छे पौष्टिक अनाज के रूप में जाना जाता है। इसके 100 दाने में 14 ग्राम प्रोटीन, 7 ग्राम डायटरी फाइबर, 197 मिग्रा. मैग्नीशियम, 563 मिग्रा. पोटेशियम और 5 मिग्रा. विटामिन बी पाया जाता है। इसका अंतर्राष्ट्रीय बाजार में 50 5हजार रुपये से 1 लाख रुपये प्रति क्विंटल तक का भाव मिलता है। किनोवा का सबसे ज्यादा उपयोग रोजाना सुबह नाश्ते में किया जाता है। जिससे वजन कम करने और मधुमेह को नियंत्रण करने में लाभ होता है। इसे वजन घटाने में सुपर फूड भी माना जाता है। इसके अलावा हृदय को स्वस्थ रखनेए त्वचा चमकानेए डायबिटीज में फायदे, अनीमिया, पाचन क्रिया और हड्डियों को भी मजबूत बनाने में किया जाता है।

तुलसी की खेती से होगा लाभ

मोहन भाई ने अभी अभी खरीफकी फसल के रूप में तुलसी का उत्पादन लिया है। तुलसी के औषधीय गुणों के अलावा किसी भी घर में तुलसी के पौधे की मौजूदगी तनाव को दूर करने में मदद करती है। इस पौधे को घर में रखने से वायु शुद्ध होती है। ऐसा माना जाता है कि तुलसी का पौधा हवा से जहरीली गैसों जैसे सल्फर डाइआॅक साइड, कार्बन डाइआॅक साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड आदि को अवशोषित करता है।

सफेद मूसली की सतत् जैविक खेती के लिए मलेशिया में मिला सम्मान

मोहन भाई निमाड़ के उन किसानों में शुमार है। जो लगातार 20 वर्षों से सफेद मुसली की खेती कर लुप्त बीजों को सहेजने का काम भी कर रहे हैं। इसके बीजों को संवर्धित करने का तरीका भी नायाब है। इनके द्वारा बीजों को फसल आने के बाद जमीन में ही रहने दिया जाता है। भूमि अंदर ही दो से चार माह तक कोल्ड स्टोरेज के रूप में रखते हैं। जैसे ही किसानों के ऑर्डर मिलते हैं निकाल कर बेंच देते हैं। इस फसल को बचाएँ रखने और संवर्धन के लिए मोहन पाटीदार को वर्ष 2018 में मलेशिया की कॉमलवेल्थ वोकेशनल यूनिवर्सिटी द्वारा प्रषस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

किस संभाग में कितना दिया गया फसल बीमा क्लेम, सीएम शिवराज ने दी जिलेवार जानकारी

आत्म-निर्भर मध्यप्रदेश के निर्माण में कृषि क्षेत्र की महत्वपूर्ण भागीदारी है, फसल बीमा राशि प्रदेश के प्रभावित किसानों के लिये संजीवनी बनी है: सीएम चौहान

भोपाल। मध्य प्रदेश में किसानों को 49 लाख प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के क्लेम के रुप में 7618 करोड़ रुपये की सहायता राशि मिली है, जिसके बाद किसानों में खुशी की लहर देखी जा रही है। गांव के किसानों को उनका हक दिलाने में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह और कृषि मंत्री कमल पटेल का आभार जता रहे है। मध्यप्रदेश में किसानों के ऊपर कोई भी संकट आता है तो मुख्यमंत्री शिवराज और कृषि मंत्री कमल पटेल की जोड़ी संकटमोचक की भूमिका निभाते हुए किसानों की मदद करने के लिए हमेशा तत्पर नजर आई है।

हाल ही में फरवरी माह के दौरान प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कृषि मंत्री कमल पटेल की मौजूदगी में एक क्लिक से प्रदेश के 49 लाख 85 हज़ार 24 किसानों के खाते में 7 हजार 618 करोड़ 8 लाख 52 हज़ार 22रुपये फसल बीमा की क्षतिपूर्ति का भुगतान किया। इसके साथ मध्य प्रदेश देश में किसानों को सर्वाधिक बीमा क्लेम देने वाला राज्य भी बन गया। मुख्यमंत्री ने कहा मध्यप्रदेश में डबल इंजन सरकार ने 22 महीनों के कार्यकाल में 95 लाख से अधिक किसानों के खाते में 16 हजार 594 करोड़ रुपए से अधिक की राशि पहुंचाई है।

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह श्रीचौहान ने कहा कि प्रदेश के 1074 ग्रामों में ओलावृष्टि से और असामयिक वर्षा से एक लाख 34 हजार 19 हेक्टेयर क्षेत्र में फसलों को क्षति हुई थी। प्रभावित जिलों को राहत राशि देने का कार्य प्राथमिकता से किया गया। गौरतलब है कि खरीफ2020 और रबी 2021 के लिए 45 लाख से अधिक किसानों के खातों में बीमा राशि का भुगतान भी कर दिया गया है। फसल बीमा दावा के भुगतान की कुल 7 हजार 669 करोड़ रुपए है।

मध्य प्रदेश सरकार पूरे देश में अव्वल: कृषि मंत्री पटेल

कृषिमंत्री कमल पटेल ने बताया कि मध्य प्रदेश में प्रधानमंत्री, केंद्रीय कृषि मंत्री और मुख्यमंत्री द्वारा किसानों की आय दोगुना करने की दिशा में काम हो रहा है। मुख्यमंत्री पहले किसान हैं फिर मुख्यमंत्री हैं। मैं किसान पहले हूं, हमें किसानों का दर्द पता है। जब हम विपक्ष में थे तब किसानों के लिए लड़ाई लड़ते थे। आरबीसी में 100 रुपये की मदद भी नहीं मिलती थी। जब भाजपा आई तो आरबीसी में बदलाव किया अब लाखों की राशि मिलती है। फसल बीमा योजना बनाकर किसानों को मदद दी। सात साल तक प्रदेश कृषि कर्मण अवार्ड जीतता रहा। कृषि विकास दर 20 से 25 प्रतिशत बढ़ गई। खाद्यान्न उत्पादन के मामले में मध्यप्रदेश देश में पहले नंबर पर आ गया है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की इस महत्वाकांक्षी योजना का लाभ उठाकर कृषि को लाभ का धंधा बनाने के सपने को साकार करने में मध्य प्रदेश सबसे आगे है। मुख्यमंत्री प्रदेश के किसानों को योजना का भरपूर लाभ देना चाहते हैं। इसी वजह से पिछले 5 साल से राज्य में बीमा योजना से लाभान्वित किसानों की संख्या लगातार बढ़ रही है। आत्मनिर्भर भारत की तर्ज पर आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश के रोडमैप पर काम कर रहे मुख्यमंत्री ने कृषि कल्याण योजनाओं को भी सर्वोच्च प्राथमिकता पर रखा है। राज्य सरकार ने सुनिश्चित किया है कि न सिर्फफसल बीमा योजना बल्कि किसानों को केंद्र व राज्य सरकार की हर योजना का भरपूर लाभ मिले।

2016 में शुरू हुई थी योजना

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वर्ष 2016 में फसल बीमा योजना की शुरुआत की थी। कोशिश थी कि योजना से किसानों को फसल की सुरक्षा प्रदान की जा सके। प्राकृतिक आपदाओं की वजह से फसलों को होने वाले नुकसान का खामियाजा किसानों को न भुगतना पड़े। फसल बीमा योजना में प्रीमियम राशि को भी किसान की आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए काफी कम रखा गया है। खरीफ फसलों के लिए बीमा राशि का मात्र 2 प्रतिशत और रबी फसलों पर बीमा राशि का पर 1.5 प्रतिशत प्रीमियम राशि किसानों को देनी होती है।

इस तरह बढ़ते गए बीमा योजना के दावे

साल 2016.17 में फसल बीमा योजना की शुरुआत हुई। पहले ही साल रबी व खरीफकी फसल मिलाकर कुल 9 लाख 61 हज़ार 659 किसानों को 1.814 करोड़ रुपये की फसल बीमा राशि वितरित की गई थी। 2019.20 में प्रदेश के 25 लाख 46 हजार 649 किसानों को 6.016 करोड़ रुपये की बीमा राशि वितरित की गई। 2020 की खरीफऔर 2020.21 की रबी की फसलों के दावों की संख्या 49 लाख तक पहुंच चुकी है। राज्य सरकार की कोशिश है कि आगे भी ज्यादा से ज्यादा किसानों को फसल बीमा योजना के अंतर्गत फसलों को होने वाले नुकसान की सहायता राशि का भुगतान कराया जा सके।

फसल बीमा से जुड़े बन ग्राम

पीएम मोदी का सपना है कि कृषि को लाभ का उद्योग बनाना है। इसलिए राज्य सरकार इस लक्ष्य के साथ कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री कई बार अपने कार्यों से और भाषणों के जरिए यह बता चुके हैं कि उनकी सरकार किसानों के हित के लिए कार्य करती है।

संभागवार कहां कितनी मिली फसल बीमा क्लेम राशि

मध्य प्रदेश के सीएम शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि फसल क्षति की सबसे बड़ी सहायता रकम वितरित कर प्रदेश सरकार ने बनाया रिकार्ड है।

भोपाल डिवीजन के 5 जिलों में 10 लाख 62 हजार 574 दावों में 2 हजार 58 करोड़ 31 लाख रुपए का भुगतान किया गयाण् इसमें भोपाल जिले में 80 हजार 167 फसल बीमा दावों में 152 करोड़ 02 लाख रुपए, सीहोर में 2 लाख 82 हजार 520 दावों में 761 करोड़ 23 लाख रूपये, रायसेन में एक लाख 48 हजार 072 दावों में 269 करोड़ 80 लाख रुपए, विदिशा में 2 लाख 56 हजार 273 दावों में 493 करोड़ 99 लाख रुपए और राजगढ़ में 2 लाख 95 हजार 542 दावों में 381 करोड़ 27 लाख रुपए की फसल बीमा राशि वितरित की गई।

ग्वालियर संभाग में 218 करोड़ की रकम दी गई– ग्वालियर संभाग के ग्वालियर, दतिया, शिवपुरी, गुना और अशोकनगर जिले में फसल बीमा के 2 लाख 37 हजार 499 दावों में 218 करोड़ 41 लाख रुपए की राशि वितरित की गई। इसमें ग्वालियर में 1645 दावों में एक करोड़ 19 लाख रुपए, दतिया में 32 हजार 605 दावों में 20 करोड़ 80 लाख रुपएए शिवपुरी में 57 हजार 881 दावों में 40 करोड़ 56 लाख रुपए, गुना में 80 हजार 822 दावों में 87 करोड 73 लाख रुपए और अशोकनगर जिले के 64 हजार 546 फसल बीमा दावों में 68 करोड़ 13 लाख रुपए की राशि वितरित की गई।

इंदौर संभाग में 922 करोड़– इंदौर डिवीजन के 8 जिलों में 7 लाख 67 हजार 582 बीमा दावों में 922 करोड़ 84 लाख रुपये की राशि किसानों के खाते में ट्रांसफर की गई। इसमें इंदौर के एक लाख 86 हजार 812 बीमा दावों में 380 करोड़ 54 लाख रुपये, झाबुआ में 45 हजार 666 बीमा दावों में 20 करोड़ 49 लाख रुपये, बड़वानी में 43 हजार 726 बीमा दावों में 22 करोड़ 57 लाख रुपये एवं खरगोन में एक लाख 5 हजार 266 बीमा दावों में 79 करोड़ 79 लाख रुपये दिए गए। खण्डवा में एक लाख 43 हजार 456 बीमा दावों में 152 करोड़ 9 लाख रुपयेए धार में 2 लाख एक हजार 407 बीमा दावों में 232 करोड़ 57 लाख रुपये, बुरहानपुर में 5 हजार 470 बीमा दावों में 5 करोड़ 89 लाख रुपये और अलीराजपुर के 35 हजार 779 बीमा दावों में 8 करोड़ 90 लाख रुपये की राशि वितरित की गई।

जबलपुर संभाग के किसानों को मिले 142 करोड़– जबलपुर डिवीजन के 8 जिलों में एक लाख 87 हजार 342 बीमा दावों में 141 करोड़ 91 लाख रुपये की राशि किसानों के खाते में डाली गई। इसमें जबलपुर के 11 हजार 86 बीमा दावों में 8 करोड़ 87 लाख रुपये, कटनी में 7 हजार 202 बीमा दावों में 7 करोड़ 34 लाख रुपये, नरसिंहपुर में 34 हजार 895 बीमा दावों में 22 करोड़ 37 लाख रुपये, सिवनी में 27 हजार 809 बीमा दावों में 27 करोड़ 33 लाख रुपये दिए गए। बालाघाट में 26 हजार 531 बीमा दावों में 22 करोड़ 63 लाख रुपयेए छिन्दवाड़ा में 66 हजार 156 बीमा दावों में 44 करोड़ 87 लाख रुपयेए डिण्डोरी में 6 हजार 457 बीमा दावों में 3 करोड़ 45 लाख रुपये और मण्डला के 7 हजार 206 बीमा दावों में 5 करोड़ 5 लाख रुपये की राशि वितरित की गई।

रीवा में 46 करोड़ रुपये–रीवा डिवीजन के 4 जिलों में 49 हजार 508 दावों में 45 करोड़ 92 लाख रुपए का भुगतान किया गया। इसमें रीवा जिले में 14 हजार 540 बीमा दावों में 16 करोड़ 67 लाख रुपएए सतना में 29 हजार 568 दावों में 22 करोड़ 43 लाख रूपए, सिंगरौली में एक हजार 297 दावों में एक करोड़ 42 लाख रुपए और सीधी में 4 हजार 103 दावों में 5 करोड़ 40 लाख रुपए की फसल बीमा राशि वितरित की गई।

सागर में किसानों को मिले 382 करोड़ रुपये– सागर डिवीजन के 6 जिलों में 3 लाख 729 बीमा दावों में 382 करोड़ 3 लाख रुपये की राशि किसानों के खाते में ट्रांसफर की गईण् इसमें सागर के एक लाख 73 हजार 682 बीमा दावों में 265 करोड़ 42 लाख रुपयेए निवाड़ी में 8 हजार 62 बीमा दावों में 3 करोड़ 55 लाख रुपयेए पन्ना में 11 हजार 237 बीमा दावों में 5 करोड़ 27 लाख रुपयेए टीकमगढ़ में 27 हजार 140 बीमा दावों में 14 करोड़ 12 लाख रुपयेए छतरपुर में 26 हजार 886 बीमा दावों में 18 करोड़ 62 लाख रुपये और दमोह में 53 हजार 722 बीमा दावों में 75 करोड़ 5 लाख रुपये की राशि वितरित की गई।

यहां पर 2867 करोड़ रुपये का भुगतान–उज्जैन डिवीजन के 7 जिलों में 19 लाख 22 हजार 528 बीमा दावों में 2867 करोड़ 17 लाख रुपये की राशि किसानों के खाते में ट्रांसफर की गईण् इसमें उज्जैन के 5 लाख 93 हजार 831 बीमा दावों में 689 करोड़ 46 लाख रुपयेए देवास में 3 लाख 15 हजार 423 बीमा दावों में 666 करोड़ 69 लाख रुपयेए नीमच में एक लाख 37 हजार 650 बीमा दावों में 156 करोड़ 18 लाख रुपये का भुगतान किया गया। आगर.मालवा में एक लाख 9 हजार 544 बीमा दावों में 182 करोड़ 56 लाख रुपये, रतलाम में 2 लाख 48 हजार 681 बीमा दावों में 318 करोड़ 20 लाख रुपये, मंदसौर में 2 लाख 90 हजार 867 बीमा दावों में 368 करोड़ 95 लाख रुपये और शाजापुर में 2 लाख 26 हजार 532 बीमा दावों में 485 करोड़ 13 लाख रुपये की राशि वितरित की गई।

चंबल में 25 करोड 37 लाख रुपए– चंबल संभाग के 3 जिलों में 20 हजार 357 दावों में 25 करोड़ 37 लाख रुपए का भुगतान किया गया। इसमें श्योपुर जिले में 14 हजार 526 बीमा दावों में 21 करोड़ 76 लाख रुपए, मुरैना में 4 हजार 346 दावों में 2 करोड़ 44 लाख रूपए और भिण्ड में एक हजार 485 दावों में एक करोड़ 17 लाख रुपए की फसल बीमा राशि खातों में भेजी गई।

नर्मदापुरम् डिवीजन– 3 जिलों में 4 लाख 3 हजार 944 दावों में 925 करोड़ 21 लाख रुपए का भुगतान किया गयाण् इसमें नर्मदापुरम् (होशंगाबाद) जिले में एक लाख 49 हजार 614 बीमा दावों में 273 करोड़ 20 लाख रुपए, हरदा में एक लाख 25 हजार 856 दावों में 345 करोड़ 79 लाख रूपए और बैतूल में एक लाख 28 हजार 474 दावों में 306 करोड़ 79 लाख रुपए की फसल बीमा राशि वितरित की गई।

शहडोल 31 करोड़ रुपये –शहडोल डिवीजन के 3 जिलों में 32 हजार 961 दावों में 30 करोड़ 93 लाख रुपए का भुगतान किया गया। इसमें अनूपपुर जिले में 7 हजार 236 बीमा दावों में 7 करोड़ 78 लाख रुपए, उमरिया में 9 हजार 941 दावों में 8 करोड़ 26 लाख रूपए और शहडोल में 15 हजार 784 दावों में 14 करोड़ 89 लाख रुपए की फसल बीमा राशि ट्रांसफर की गई।

खरगोन जिले में 1 लाख 5 हजार 266 किसान हुए लाभांवित

खरीफ 2020 एवं रबी 2020.21 प्रदेश में 49 लाख दावों की 7.618 करोड़ रूपये की राशि का भुगतान सिंगल क्लिक के माध्यम से कृषकों के बैंक खातों में अंतरित की। इस कार्यक्रम का सीधा प्रसारण कृषि उपज मंडी समिति बिस्टान रोड़ खरगोन में किया गया। यहांयोजना के अन्तर्गत जिले में कुल 1 लाख 5 हजार 266 किसानों को फसल बीमा की कुल 79 लाख रूपये की राशि सीधे किसानों के बैंक खातों में हस्तांररित की गई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पूर्व राज्यमंत्री बालकृष्ण पाटीदार ने कृषकों को जैविक खेती एवं प्राकृतिक खेती की शुरूआत करने की सलाह दी। इस दौरान परियोजना संचालक आत्मा केके पांडे , ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी पीएस बार्चे ने योजनाओं की जानकारी दी।, कृषि सहायक संचालक प्रकाश ठाकुर ने अतिथियों एवं कृषकों को आभार प्रकट किया गया।भीकनगांव विकासखण्ड के ग्राम नीमखेड़ी के कृषक धर्मेन्द्र यादव को जिले में सर्वाधिक 4 लाख 56 हजार 856 रूपये का बीमा प्रदाय किया गया।

संपादकीय

कृषि हितैषी जानकारी किसानों तक पहुंचाने का माध्यम होगा हलधर किसान

सम्माननीय, किसान भाईयो हमें बेहद खुशी हो रही है कि हम हमारे किसान भाईयो को 'हलधर किसान' राष्ट्रीय मासिक समाचार पत्र के माध्यम से एक ऐसा मंच प्रदान करने जा रहे है जो किसानों को नई. नई उन्नत कृषि तकनिको से रुबरु कराने का माध्यम बने। यह समाचार पत्र पुर्णरुप से किसानों को समर्पित होगा।यह कृषि अखबार शासन. प्रशासन की किसान और कृषि हितैषी योजनाओं को किसानों तक पहुंचाने का माध्यम होगा, इतना ही नहीं इस समाचार पत्र के माध्यम से हम किसानों की समस्याएं, खेती. किसानी में आ रही समस्याओं को भी शासन तक पहुंचाने का प्रयास करेंगे। इस समाचार पत्र में कृषि के साथ बागवानी, पशुपालन, कृषि उपकरणो, जलवायु परिवर्तन की जानकारी भी उपलब्ध करायेगा। हमें आशा है कि यह समाचार पत्र किसानों का मुखपत्र बने और किसान इससे जुड़कर इसमें प्रसारित होने वाली सटिक और सकारात्मक जानकारियों का लाभ लें। प्रथम संस्करण को प्रकाशित करने तथा पाठको के मध्य लाने के लिए अत्यंत उत्साहित हैं। हमारे पहले अंक की रूपरेखा विषय हैः वर्तमान परिदृश्य में कृषकों को विभिन्न नवीन कृषि तकनीकों की जानकारी प्रदान करके आय में वृद्धि तथा उनके जीवन स्तर में सुधार हेतु मार्ग प्रशस्त करना।

किसान समाचार पत्र हिंदी में प्रकाशित एक मासिक समाचार पत्र होगा। कृषि, पशुपालन, बागवानी, कृषि उपकरणों के साथ ही उन्नत कृषि बीजो का समावेश होगा।हमारी टीम निरंतर कृषि के विभिन्न क्षेत्रों में होने वाली नवीन अनुसंधानों पर ध्यान केंद्रित किया हुआ है एंव इसका लक्ष्य किसान समाचार पत्र के माध्यम से युवा कृषि वैज्ञानिको तथा प्रगतिशील कृषकों के लेखों, उनके विचारो को कृषको के मध्य प्रस्तुत करना हैं। हम किसान प्रथम संस्करण में आपका स्वागत करते हैं एंव आशा करते हैं कि आपको इस अखबार के माध्यम से हम कृषि एंव उससे जुडी नवीन जानकारीयों को देने में सफल हो सकें। किसानों को भी अपने विचार रखने के लिए किसानों की पाती (चिट्ठी) हर अंक में प्रकाशित कि जाएगी, किसान भाई एवं कृषि से जुड़ाव रखने वाले पाठक इसमें अपनी किसान पाती भेंज सकते है, जिसे प्रमुखता से प्रकाशित किया जाएगा।एक बार पुनः बधाई।

किसान और चार आलसी बेटे की प्रेरणादायक कहानी

एक किसान था। उसके चार बेटे थे और चारो बेटे बहुत ही आलसी थे। वह कुछ भी कामकाज नहीं करते थे। किसान दिन भर अपने खेत में काम करता था और कोई भी लड़का उसका हाथ बटाने नहीं आता था। किसान बहुत चिंतित रहता था की उसके मरने के बाद उसके चारों बेटों का क्या होगा? यही बात उसे दिन .रात खाए जाती थी। एक दिन किसान बहुत बीमार हो गया, उसे पता चल गया कि अब उसका अंतिम समय निकट है। उसने अपने चारों बेटों को बुलाया और कहा कि .मैं जानता हूं मेरे मरने के बाद तुम चारों कुछ नहीं करोगे तुम्हारे खाने.पीने का भी ठिकाना नहीं रहेगा, इसीलिए मैंने खेत में बहुत सारा धन छुपा कर रखा हुआ है,तुम वह धन खोज कर निकाल लेना और अपनी जिंदगी को आराम से जीना।

इतना कहने के बाद किसान की मृत्यु हो गई और किसान के चारो बेटे बहुत दुखी हुए, परंतु अब क्या हो सकता था। कुछ दिन तो वह घर में रखा हुआ अनाज खाते रहे, लेकिन आखिरी में वह भी खत्म हो गया उन्होंने सोचा अब तो हमें खेत को खोदकर खजाना निकालना ही पड़ेगा इसके अलावा अब कोई भी उपाय हमारे पास नहीं बचा है। ऐसा सोचकर चारो बेटे सुबह उठे और खेत को खोदने पहुंच गए। खेत बहुत बड़ा था और उनमें से किसी को भी इस बात का पता नहीं था कि खजाना खेत के किस हिस्से में छुपा हुआ है जिस कारण उन्हें पूरा खेत खोदना पड़ा। यह क्रम चार.पांच दिन तक चलता रहा चारो बेटे सुबह उठते और खजाने के लालच में खेत को खोदते रहते। आखिर में उन्होंने सारा खेत अच्छे से खोद दिया, लेकिन उन्हें खजाना कहीं भी नहीं मिला। वह बहुत दुखी हुए फिर उन्होंने सोचा जब हमने इतनी मेहनत कर ही ली है तो क्यों ना अब हम खेत में बीज ही डाल दे, जिससे फसल ही हो जाएगी और हम वह फसल बेच कर हम कुछ पैसे कमा लेंगे, जिससे हमें भोजन प्राप्त होगा,आगे की फिर आगे देखेंगे। ऐसा सोचकर चारों ने मिलकर बीज बोए और खेत की बहुत ही अच्छे से देखभाल करने लगेण् धीरे.धीरे उनका आलस कम होने लगा जो .जो फसल बढ़ने लगी उसे देख कर चारो बेटे हर्षाने लगे, उन्हें अच्छा लगने लगा।

और आखिर एक दिन उनकी फसल पक कर तैयार हो गई और वह चारों उस फसल को काटकर मंडी में ले गए। वहां उन्हें उस फसल के बहुत अच्छे दाम मिले। यह पैसा उन चारों की मेहनत की कमाई का था इसलिए चारो बेटे बहुत ही खुश हुए उनकी इतनी मेहनत देखकर गांव का एक बुजुर्ग आदमी उनके पास आया और कहा बेटा तुम्हारी इतनी मेहनत देख कर हम बहुत खुश होते हैं। तुम्हारे पिता की आत्मा को अब जरूर शांति मिल जाएगी।_तब चारों लड़कों ने उस बुजुर्ग आदमी से कहा कि हम तो पिता जी के कहने से खेत में खजाना ढूंढ रहे थे, वह तो हमें मिला नहीं इसलिए हमने बीज बो दिए और इतनी अच्छी फसल तैयार हो गई।

तब उस बुजुर्ग आदमी ने कहा तुम्हारे पिता ने सही कहा था इस खेत में खजाना छुपा हुआ है। चारों लड़के एक दूसरे का मुंह देखने लगे और उन्होंने कहा आप हमें बताएं खजाना कहां छुपा हुआ है हम अभी उसे निकाल लेंगे बुजुर्ग आदमी हंसने लगा कहने लगा वह खजाना तो तुम्हें कब का मिल गया। लड़कों ने कहा नहीं हमें कोई भी खजाना नहीं मिला। बुजुर्ग ने कहा वो खजाना तुम्हारी फसल ही थी जो तुमने धरती को खोदकर निकाली , तुम्हारे पिताजी के कहने का मतलब यही था, कि तुम धरती को खोदोऔर तुम्हें खजाना मिल जाएगा।

चारों लड़कों को अपने पिता की सीख समझ आ गई और वह उस दिन के बाद अपनी जिंदगी में सतर्क हो गए और आलस करना बिलकुल छोड़ दिया, क्योंकि उन्हें पता चल गया था कि वाकई में उनके खेत में खजाना छुपा हुआ है वह उसे जितना ढूंढगे उतना ही मिलेगा, कभी भी कम नहीं होगा और ना ही खत्म होगा। इसीलिए आप जितनी मेहनत करेंगे आपको उतनी ही सफलता प्राप्त होगी।

(शिक्षाः इस कहानी से हमें शिक्षा मिलती है कि मेहनत/ परिश्रम ही जीवन की पूंजी है।)

मिट्टी की उर्वरता में कैसे करें सुधार?

जिस तरह से हमारे देश में कई तरह की फसलें पाई जाती हैं। ठीक उसी तरह से यहां अलग.अलग तरह की मिट्टी भी पाई जाती है। मिट्टी में कार्बनिक और अकार्बनिक पदार्थ से लेकर कई तरह के जैविक प्रदार्थ व खनिज भी मौजूद होते हैं। जिस तरह से खेती करने के लिए पानी की जरूरत होती है। ठीक उसी तरह से खेती के लिए मिट्टी का उपजाऊ होना बेहद जरूरी होता है। तो आइए आज हम इस लेख में मिट्टी की उर्वरता के बारे में जानते हैं।

सबसे पहले जान लेते है कि मिट्टी क्या है?

मिट्टी की सबसे ऊपरी सतह जिस पर फसल व अन्य कार्य किए जाते है, उसे हम मिट्टी कहते हैं। मिट्टी में कई तरह के खनिज पदार्थ पाए जाते है, जिससे यह फसल को अच्छा बनाती है।

मिट्टी की उर्वरता में सुधार कैसे करें?

किसान भाइयों को अपने खेत से लगातार उत्पादन प्राप्त करने के लिए उसकी उर्वरता को बनाए रखना बेहद जरूरी है। आपको बता दें कि किसान अपने खेत में एक के बाद एक अधिक उपज देने वाली फसलों का उत्पादन करते रहते हैं, जिससे खेती की उर्वरता में गिरावट होती चली जाती है और एक समय में मिट्टी की उत्पादन क्षमता खत्म हो जाती है। किसान खेत में धान की फसल से अच्छा और अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए रासायनिक उर्वरकों का अधिक मात्रा में उपयोग करते है। इससे किसानों को मुनाफा तो मिलता है, लेकिन मिट्टी की उत्पादन क्षमता धीरे.धीरे खत्म होने लगती है।

इसके बचाव के लिए आपको नीचे दी गई बातों को ध्यान में रखना होगा।

किसानों को अपने खेत में दालों की फसलों पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए।

खेत में एक बार गहरी जड़ों वाली फसलों के बाद उथली और छोटी जड़ों वाली फसलों को लगाएं।

अधिक पानी की फसल लगाने के बाद खेत में कम पानी वाली फसलों को भी एक बार जरूर लगाएं, जैसे. कि मटर, मसूर, सरसों और चना आदि का उत्पादन जरूर करेण

लंबी अवधि की फसल के बाद कम समय वाली फसलों को लगाएं, जैसे कि गेहूं के बाद दालों की फसल को लगाएं।

खेत में ऐसे पौधों को लगाएं जो आपके खेत की जलवायु और वातावरण के अनुकूल हो और साथ ही खेत में कीटनाशक पौधे लगाएं।

जितना हो सके खेत में सिंचाई के दौरान ड्रिप सिंचाई प्रणाली का प्रयोग करें।

समय.समय पर खेत में प्राकृतिक उत्पादों के साथ कीटों और बीमारियों का सही तरीकों से इलाज जरूर करें।

मिट्टी के प्रकार हमारे देश में मुख्यत: 6 प्रकार की मिट्टी पाई जाती है। .जलोढ़ मिट्टी. काली मिट्टी. लाल मिट्टी, पर्वतीय मिट्टी, लैटराइट मिट्टी, बलुई मिट्टी

. जलोढ़ मिट्टी : जलोढ़ मिट्टी नदियों द्वारा अपने मार्ग में जमा की गई मिट्टी होती है। यह मिट्टी दो प्रकार की होती है। खादर मिट्टी, बांगर मिट्टी

इसे दोमट मिट्टी भी कहते हैं। दोमट मिट्टी में उपजाऊपन सबसे अधिक होता है। इसमें लगभग 40 प्रतिशत सिल्ट, 20 प्रतिशत चिकनी मिट्टी तथा शेष 40 प्रतिशत बालू होता है। दोमट मिट्टी अपने कुल भार का 50 प्रतिशत पानी रोकने की क्षमता रखती है। इस मिट्टी में पोषक तत्वों की मात्रा अधिक होती है। अगर हम क्षेत्रफल की दृष्टि से देखें तो जलोढ़ मिट्टी भारत में सबसे अधिक क्षेत्रों में पाई जाती है। भारत में लगभग 35 से 40 प्रतिशत भाग में यह मिट्टी मिलती है। अधिकतर किसान भी अपनी फसलों के लिए इसी मिट्टी पर निर्भर रहते है। क्योंकि इसमें उपजाऊ क्षमता अधिक होती है। जलोढ़ मिट्टी में धान, गेहूं, चावल, बाजरा, चना, सरसों, मक्का, मूंगफली तथा तिलहनो के अलावा फलों व सब्जियों के लिए भी जलोढ़ मिट्टी का इस्तेमाल किया जाता है। यह मिट्टी उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, पश्चिम बंगाल, बिहार, असम और गुजरात में पाई जाती है।

काली मिट्टी: इस मिट्टी को रेगुर मिट्टी के नाम से भी जाना जाता है। इस मिट्टी में आयरन, चूना, एल्युमीनियम जीवांश और मैग्नीशियम अधिकता होती है। इस मिट्टी का काला रंग हमें इसलिए दिखाई देता हैए क्योंकि इसमें टिटेनीफेरस मैग्नेटाइट और जीवांश मिला होता है। इसमें कपास, गेहूं, जौ, गन्ना, अलसी, तंबाकू तथा तिलहन आदि। यह मिट्टी महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश में पाई जाती है।

इसी तरह लाल मिट्टी झारखंड, ओडिशा, तमिलनाडु, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र और कर्नाटक के साथ इस मिट्टी को नागालैंड व राजस्थान के अरावली क्षेत्र में भी आपको देखने को मिलती है। पर्वतीय मिट्टी में कंकड़ और पत्थर अधिक मात्रा में पाए जाते हैं। इसलिए यह मिट्टी आपको भारत के पर्वतीय क्षेत्रों में अधिक देखने को मिलेगी। यहां चाय, कॉफी, मसालों तथा औषधीय गुणों वाले पौधों के अलावा यह आलू और कुछ चुनिंदा फलों की उपज के लिए किसानों के लिए एक बेहतर विकल्प है। लैटराइट मिट्टी में रागी, चावल, रबर, गन्ना, नारियल, चाय व कॉफी तथा काजू आदि के लिए यह लैटराइट मिट्टी अच्छी मानी जाती है। बलुई मिट्टी बलुई मिट्टी खेती करने के लिए योग्य नहीं मानी जाती है। इसमें रेत होती है जो राजस्थान, गुजरात, हरियाणा और पंजाब में पाई जाती है।

औषधिय पौधे बन सकते है कमाई का जरिया, कम लागत में हो सकता है अधिक मुनाफा

मंडियों को नेटवर्क भी किया जाएगा तैयार

फायदे की बात: देश के किसान अब परंपरागत खेती के साथ मुनाफे वाली फसलों की तरफ रुख करने लगे है। हालांकि अभी भी कई किसान ऐसे है जो जानकारी के अभाव में नई फसलों की खेती करने में या तो कतरा रहे है या असमर्थ है। भारत देश औषधियों की खान माना जाता है, यहां लंबे समय से पेड़.पौधों के अलग.अलग हिस्सों का इस्तेमाल कर के रोगों और बीमारियों को ठीक किया जाता रहा है। उच्च जैव विविधता वाले देश में भारत शामिल है। बहुत सी वनस्पतियों की किस्में सिर्फ भारत में ही पाई जाती है। इन औषधीय पौधों की खेती कर के किसान बेहतर लाभ कमा सकते हैं। मौजूदा समय में कोरोना के कारण लोगों ने एक बार फिर प्राकृतिक औषधीयों की ओर रुख किया है। शरीर की इम्युनिटी बढ़ाने से लेकर बेहतर स्वास्थ्य के लिए लोग औषधीय पौधों का सहारा ले रहे हैं। भारतीय औषधीयों की बढ़ती मांग को देखते हुए किसानों के लिए औषधीय पौधों की खेती आर्थिक रूप से काफी फायदेमंद साबित हो सकती है। औषधीय खेती को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार भी किसानों का हर संभव सहयोग कर रही है।

आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत दिए गए आर्थिक पैकेज में औषधीय खेती को प्रोत्साहन देने के लिए 4000 करोड़ रुपए दिए गए हैं। भारत सरकार द्वारा कराए गए एक सर्वेक्षण के हिसाब से यहां करीब 8000 पेड़.पौधे ऐसे हैं, जिनका उपयोग औषधीय रुप से किया जाता हैण् इनसे बने उत्पाद और दवाइयों की विदेशों में भी अच्छी.खासी मांग रहती है और यहीं मांग किसानों के लिए औषधीय पौधों की खेती के लिए द्वार खोलती है।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड ने करीब सवा दो लाभ हेक्टेयर क्षेत्र में औषधीय पौधों की खेती को सहायता प्रदान की है। आगामी वर्षों में 4000 करोड़ रुपए के व्यय से हर्बल खेती के तहत 10 लाख हेक्टेयर क्षेत्र को कवर किया जाएगाण् इससे किसानों को करीब 5000 करोड़ रुपए की आय होगीण् इतना ही नहीं, औषधीय पौधों के लिए क्षेत्रीय मंडियों का नेटवर्क भी होगा। हर्बल खेती किसानों की आय को दोगुनी करने में भी मददगार साबित होगी। हर्बल उत्पादों की ओर बढ़ते भारत में सफेद मुस्ली से ऐसी दवाइयां बनाई जा रही हैं। जिससे प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। लेमनग्रास के तेल का उपयोग नींबू की खुशबू वाले साबुन में किया जाता है। श्यामा हर्बल से चाय और डियोड्रेंट और चमड़ा उद्योग में बदबू दूर करने के लिए इस्तेमाल हो रहा है। इस तरह देखा जाए तो औषधीय पौधों की खेती में आपार संभावनाएं मौजूद हैं।

नहीं होती विशेष देखभाल की जरुरत

अश्वगंधा, गिलोय, भृंगराज, सतावर, पुदीना, मोगरा, तुलसी, घृतकुमारी, ब्राह्मी, शंकपुष्पी और गुलर आदि बहुत ही ऐसी औषधीय फसलें हैं, जिनकी खेती किसान कर सकते हैं। किसान फसल विविधता अपनाएं और खेत खाली होने के बाद अगर उसमें औषधीय पौधों की खेती करें तो अच्छा मुनाफा ले सकते है। इन फसलों को ज्यादा देखभाल और पानी की भी जरूरत नहीं होती।

ग्रीष्मकालीन भिंडी उत्पादन की उन्नत तकनिक, फसल से अर्जित कर सकते है लाभ

भिंडी एक लोकप्रिय सब्जी है। सब्जियों में भिंडी का प्रमुख स्थान है जिसे लोग लेडीज फिंगर या ओकरा के नाम से भी जानते हैं।

भिंडी की अगेती फसल लगाकर किसान भाई अधिक लाभ अर्जित कर सकते हैं। मुख्य रुप से भिंडी में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खनिज लवणों जैसे कैल्शियम, फास्फोरस के अतिरिक्त विटामिन ए, बी, सी, थाईमीन एवं रिबोफ्लेविन भी पाया जाता है।

इसमें विटामिन ए तथा सी पर्याप्त मात्रा में पाये जाते हैं। भिंडी के फल में आयोडीन की मात्रा अधिक होती है। भिंडी का फल कब्ज रोगी के लिए विशेष गुणकारी होता है। मप्र में लगभग 23500 हे. में इसकी खेती होती है। प्रदेश के सभी जिलों में इसकी खेती की जा सकती है।

अधिक उत्पादन तथा मौसम की भिंडी की उपज प्राप्त करने के लिए संकर भिंडी की किस्मों का विकास कृषि वैज्ञानिकों द्वारा किया गया हैं। ये किस्में यलो वेन मोजकै वाइरस रोग को सहन करने की अधिक क्षमता रखती हैं। इसलिए वैज्ञानिक विधि से खेती करने पर उच्च गुणवत्ता का उत्पादन कर सकते हैं।

उत्तम किस्में

पूसा ए-4

यह भिंडी की एक उन्नत किस्म है।

यह प्रजाति 1995 में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान एनई दिल्ली द्वारा निकाली गई है।

यह एफिड तथा जैसिड के प्रति सहनशील है।

यह पीतरोग यैलो वेन मोजैक विषाणु रोधी है।

फल मध्यम आकार के गहरेए कम लस वालेए 12.15 सेमी लंबे तथा आकर्षक होते हैं।

बोने के लगभग 15 दिन बाद से फल आना शुरू हो जाते है तथा पहली तुड़ाई 45 दिनों बाद शुरु हो जाती है।

इसकी औसत पैदावार ग्रीष्म में 10 टन व खरीफमें 15 टन प्रति है।

.....

परभनी क्रांति

यह किस्म पीत रोगरोधी है।

यह प्रजाति 1985 में मराठवाड़ाई कृषि विश्वविद्यालय, परभनी द्वारा निकाली गई है।

फल बुआई के लगभग 50 दिन बाद आना शुरू हो जाते हैं।

फल गहरे हरे एवं 15.18 सेंमी लम्बे होते हैं।

इसकी पैदावार 9.12 टन प्रति है।

.....

पंजाब.7

यह किस्म भी पीतरोग रोधी है। यह प्रजाति पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना द्वारा निकाली गई है। फल हरे एवं मध्यम आकार के होते हैं। बुआई के लगभग 55 दिन बाद फल आने शुरू हो जाते हैं। इसकी पैदावार 8.12 टन प्रति है।

.....

अर्का अभय

यह प्रजाति भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बैंगलोर द्वारा निकाली गई हैं।

यह प्रजाति येलोवेन मोजेक विषाणु रोग रोधी हैं।

इसके पौधे ऊँचे 120.150 सेमी सीधे तथा अच्छी शाखा युक्त होते हैं।

अर्का अनामिका

यह प्रजाति भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बैंगलोर द्वारा निकाली गई है।

यह प्रजाति येलोवेन मोजेक विषाणु रोग रोधी है।

इसके पौधे ऊँचे 120.150 सेमी सीधे व अच्छी शाखा युक्त होते हैं। फल रोमरहित मुलायम गहरे हरे तथा 5.6 धारियों वाले होते हैं। फलों का डंठल लम्बा होने के कारण तोड़ने में सुविधा होती है। यह प्रजाति दोनों ऋतुओं में उगाई जा सकती हैं।

पैदावार 12.15 टन प्रति है हो जाती हैं।

.....

वर्षा उपहार

यह प्रजाति चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार द्वारा निकाली गई है।

यह प्रजाति येलोवेन मोजेक विषाणु रोग रोधी हैं।

पौधे मध्यम ऊँचाई 90.120 सेमी तथा इंटरनोड पासपास होते हैं।

पौधे में 2.3 शाखाएं प्रत्येक नोड से निकलती हैं।

पत्तियों का रंग गहरा हरा, निचली पत्तियां

पत्तियां चौड़ी व छोटे छोटे लोब्स वाली एवं ऊपरी पत्तियां बड़े लोब्स वाली होती है।

वर्षा ऋतु में 40 दिनों में फूल निकलना शुरु हो जाते हैं व फल 7 दिनों बाद तोड़े जा सकते हैं।

फल चौथी पांचवी गाठों से पैदा होते हैं। औसत पैदावार 9.10 टन प्रति हेण् होती हैं।

इसकी खेती ग्रीष्म ऋतु में भी कर सकते हैं।

.....

हिसार उन्नत

यह प्रजाति चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार द्वारा निकाली गई है।

पौधे मध्यम ऊँचाई 90.120 सेमी तथा इंटरनोड पासपास होते हैं।

पौधे में 3.4 शाखाएं प्रत्येक नोड से निकलती हैं।

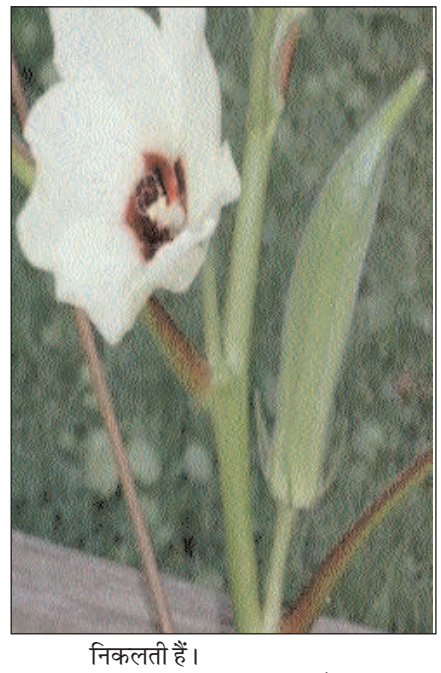

पत्तियों का रंग हरा होता हैं।

पहली तुड़ाई 46.47 दिनों बाद शुरु हो जाती है।

औसत पैदावार 12.13 टन प्रति है होती हैं।

फल 15.16 सेंमी लम्बे हरे तथा आकर्षक होते हैं।

यह प्रजाति वर्षा तथा गर्मियों दोनों समय में उगाई जाती हैं।

.....

वीआरओ.6

इस किस्म को काशी प्रगति के नाम से भी जाना जाता है।

यह प्रजाति भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी द्वारा 2003 में निकाली गई हैं।

यह प्रजाति येलोवेन मोजेक विषाणु रोग रोधी हैं।

पौधे की औसतन ऊँचाई वर्षा ऋतु में 175 सेमी तथा गर्मी में 130 सेमी होती है।

इंटरनोड पासपास होते हैं।

औसतन 38 वें दिन फूल निकलना शुरु हो जाते हैं ।

गर्मी में इसकी औसत पैदावार 13.5 टन एवं बरसात में 18.0 टन प्रति हे. तक ली जा सकती है।

बीज की मात्रा व बुआई का तरीका

सिंचित अवस्था में 2.5 से 3 किग्रा तथा असिंचित दशा में 5.7 किग्रा प्रति हेक्टेअर की आवश्यकता होती है। संकर किस्मों के लिए 5 किण्ग्राण् प्रति हेक्टर की बीजदर पर्याप्त होती है। भिंडी के बीज सीधे खेत में ही बोये जाते हैं। बीज बोने से पहले खेत को तैयार करने के लिये 2.3 बार जुताई करनी चाहिए। वर्षाकालीन भिंडी के लिए कतार से कतार दूरी 40.45 सें.मी. एवं कतारों में पौधे की बीच 25.30 सें.मी का अंतर रखना उचित रहता है। ग्रीष्मकालीन भिंडी की बुवाई कतारों में करनी चाहिए। कतार से कतार की दूरी 25.30 सेंण्मीण् एवं कतार में पौधे से पौधे के मध्य दूरी 15.20 से.मी् रखनी चाहिए। बीज की 2 से 3 सेण्मीण् गहरी बुवाई करनी चाहिए। बुवाई के पूर्व भिंडी के बीजों को 3 ग्राम मेन्कोजेब कार्बेन्डाजिम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करना चाहिए। पूरे खेत को उचित आकार की पट्टियों में बांट लें जिससे कि सिंचाई करने में सुविधा हो। वर्षा ऋतु में जल भराव से बचाव हेतु उठी हुई क्यारियों में भिण्डी की बुवाई करना उचित रहता है।

बुआई का समय

ग्रीष्मकालीन भिंडी की बुवाई फरवरी.मार्च में तथा वर्षाकालीन भिंडी की बुवाई जून.जुलाई में की जाती है। यदि भिंडी की फसल लगातार लेनी है तो तीन सप्ताह के अंतराल पर फरवरी से जुलाई के मध्य अलग.अलग खेतों में भिंडी की बुवाई की जा सकती है।

खाद और उर्वरक

भिंडी की फसल में अच्छा उत्पादन लेने हेतु प्रति हेक्टेर क्षेत्र में लगभग 15.20 टन गोबर की खाद एवं नत्रजन, स्फुर एवं पोटाश की क्रमशः 80 कि.ग्रा, 60 कि.ग्रा एवं 60 कि.ग्रा प्रति हेक्टर की दर से मिट्टी में देना चाहिए। नत्रजन की आधी मात्रा स्फुर एवं पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई के पूर्व भूमि में देना चाहिए। नत्रजन की शेष मात्रा को दो भागों में 30.40 दिनों के अंतराल पर देना चाहिए।

निराई व गुड़ाई

नियमित निंदाई.गुड़ाई कर खेत को खरपतवार मुक्त रखना चाहिए। बोने के 15.20 दिन बाद प्रथम निंदाई.गुड़ाई करना जरुरी रहता है। खरपतवार नियंत्रण हेतु रासायनिक कीटनाशकों का भी प्रयोग किया जा सकता है। खरपतवारनाशी फ्ल्यूक्लरेलिन के 1.0 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व मात्रा को प्रति हेक्टेयर की दर से पर्याप्त नम खेत में बीज बोने के पूर्व मिलाने से प्रभावी खरपतवार नियंत्रण किया जा सकता है।

सिंचाई

सिंचाई मार्च में 10.12 दिनए अप्रैल में 7.8 दिन और मई.जून में 4.5 दिन के अन्तर पर करें। बरसात में यदि बराबर वर्षा होती है तो सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती है ।

भूमि व खेत की तैयारी

भिंडी के लिये दीर्घ अवधि का गर्म व नम वातावरण श्रेष्ठ माना जाता है। बीज उगने के लिये 27.30 डिग्री सेग्रे तापमान उपयुक्त होता है तथा 17 डिग्री सेंण्ग्रे से कम पर बीज अंकुरित नहीं होता। यह फसल ग्रीष्म तथा खरीफ, दोनों ही ऋतुओं में उगाई जाती है। भिंडी को उत्तम जल निकास वाली सभी तरह की भूमियों में उगाया जा सकता है। भूमि का पी0 एच मान 7ण्0 से 7.8 होना उपयुक्त रहता है। भूमि की दो.तीन बार जुताई कर भुरभुरी कर तथा पाटा चलाकर समतल कर लेना चाहिए।

प्याज में थ्रिप्स के लक्षण पहचान कर करें सटीक उपचार

थ्रिप्स एक छोटे आकार का कीट होता है, जो प्याज की फसल को सबसे अधिक नुकसान पहुँचाता है। इसके शिशु और वयस्क दोनों रूप पत्तियों के कपोलों में छिपकर रस चूसते हैं जिससे पत्तियों पर पीले सफेद धब्बे बनते हैं और बाद की अवस्था में पत्तियां सिकुड़ जाती है। यह कीट शुरू की अवस्था में पीले रंग का होता है जो आगे चलकर काले भूरे रंग का हो जाता है।

को सबसे अधिक नुकसान पहुँचाता हैण् इसके शिशु और वयस्क दोनों रूप पत्तियों के कपोलों में छिपकर रस चूसते हैं जिससे पत्तियों पर पीले सफेद धब्बे बनते हैं, और बाद की अवस्था में पत्तियां सिकुड़ जाती है। यह कीट शुरू की अवस्था में पीले रंग का होता है जो आगे चलकर काले भूरे रंग का हो जाता है। इसका जीवन काल 8.10 दिन होता है। व्यस्क प्याज के खेत में ज़मीन में, घास पर और अन्य पौधो पर सुसुप्ता अवस्था में रहते हैं। सर्दियों में थ्रिप्स (तैला) कंद में चले जाते हैं और अगले वर्ष संक्रमण के स्त्रोत का कार्य करते हैं। यह कीट मार्च.अप्रैल के दौरान बीज उत्पादन और प्याज कंद पर बड़ी संख्या में वृद्धि करते हैं। जिससे ग्रसित पौधों की वृद्धि रुक जाती है, पत्तियाँ घूमी हुई जलेबी जैसी नजर आती हैं और कंद निर्माण पुरी तरह बंद हो जाता है। भंडारण के दौरान भी इसका प्रकोप कंदों पर बना रहता है।

रोकथाम के उपाय

प्याज में रोग एवं नियंत्रण हेतु गर्मी में खेत की गहरी जुताई करनी चाहिए।

अधिक नाइट्रोजन उर्वरक का प्रयोग ना करें क्योकि इससे थ्रिप्स कीट आक्रशित होते है।

धामनोद मंडी में डालर चने का मुहुर्तः 10 हजार 501 रुपए मिला भाव

धामनोद। कृषि उपज मंडी में गुरुवार 24 फरवरी को डॉलर चना खरीदी का मुहुर्त हुआ। विधिवत् पूजन-अर्चन के बाद निलामी प्रक्रिया शुरु हुई। भगवान बलराम के जयकारे के साथ व्यापारियों ने खरीदी शुरु कि। पहली बैलगाड़ी में भरी हुई धामनोद निवासी किसान ललित हरिराम की चना उपज 10 हजार 501 रुपए में खरीदी कि गई। किसान को माला पहनाकर शुभकामनाएं दी गई। मंडी से मिली जानकारी अनुसार मंडी में पहले दिन वाहन और 5 बैलगाड़ी से डॉलर चने की उपज पहुंची थी। जिसमें न्यूनतम 6100, अधिकतम 10501 और औसत दाम 7 हजार 915 रुपए में खरीदी हुई। उल्लेखनीय है कि इस बार मौसम अनुकुल होने से फिलहाल गेहूं और चने की फसलें बेहतर स्थिति में है, हालांकि बारिश कम होने से ज्यादातर क्षेत्रों में चने की फसलें लगाई गई है। वर्तमान में धूप तेज होने से फसलें भी जल्दी से पकेंगी, जिसके चलते किसान अब फसल कटाई की तैयारियों में जुट गए है, वहीं प्रशासनिक स्तर पर भी समर्थन मूल्य पर रबी सीजन फसल खरीदी की तैयारियां तेज हो गई है। गेहूं खरीदी के लिए पंजीयन प्रक्रिया भी चल रही है। किसानों ने बताया कि आगामी दिनों में आवक बढ़ेगी। व्यापारियों का रुझान डॉलन चने की ओर बढ़ रहा है। निमाड़ के डॉलर चने की गुणवत्ता अच्छी होने से इसकी मांग भी अधिक है।

बीज भण्डार™

भारत में तेजी से बढती हुई रिटेल चैन आउटलेट

सभी कंपनियों के उत्कृष्ट क्वालिटी के बीज मिलने का एक मात्र स्थान

मार्केट मूल्य से कम कीमत पर बीज उपलब्ध

बीज भंडार के सीड कार्ड का विमोचन करते हुए माननीय कृषि मंत्री
मध्यप्रदेश शासन श्री कमल जी पटेल एवं खरगोन विधायक श्री रवि जी जोशी

आज ही बीज भंडार में अपनी सदस्यता दर्ज कीजिए और पाइए
आपका स्मार्ट कार्ड – सीड कार्ड।
इतना ही नहीं आपको मिलेंगे सभी कंपनियों
के उच्चतम क्वालिटी के बीज और साथ ही
अर्जित होंगे आपकी हर खरीदी पर अंक।

इसके अलावा कई उत्पादों पर

आकर्षक और विशेष डिस्काउंट

डाउनलोड करें : Google play | अधिक जानकारी के लिए YouTube पर देखें : Beej Bhandar, KisanPlusTv | फॉलो :

ब्रांच-खरगोन/खंडवा/ कुक्षी/बडवाह/राजपुर/अंजड/ धामनोद
इंदौर/ जबलपुर/ मंडलेश्वर/ मनावर/ बरगी/ कसरावद

बीज भंडार की फ्रेंचाईसी लेने के लिए संपर्क करे – 8305103633, 7879428271

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक व प्रधान संपादक विवेक जैन द्वारा गोपाल प्रिंटिंग प्रेस, बलवंत मार्केट, तिलक पथ, खरगोन से मुद्रित व वार्ड क्र.05, विवेकानंद कॉलोनी से प्रकाशित। Titel Code. MPHIN/2022/37675, मोबा. नं. 9826225525, 94254 89337, (समस्त प्रकार के विवादों के लिए न्याय क्षेत्र खरगोन रहेगा)। प्रधान संपादक - विवेक जैन